|| नव भास्कर ||

जिसके सहारे पर ही हम टिके थे,
जिसके बिना हम तो दिशाहीन थे,
जिसका चरित्र ही हमारी पहचान थी,
जिसकी वाणी ही हमारी गीता थी,

उस ज्वाला को हमने क्षीण होते देखा है,
उस ज्वाला को हमने थमते हुऐ देखा है,
उस भास्कर को हमने शांत होते देखा है,
क्या हमने स्वयं का अंत देखा है?

अनन्त इतिहास में इस शाश्वत सत्य ने
हर पीढ़ी को इस चौराहे पर लाया है
परन्तु समय की अविरल इस चलती धारा ने
हर बार उसका आह्वाहन किया है,

अंत नहीं! आज तो हाथों में मशाल आयी है,
अग्रेसर होने की संधी आयी है,
पीछे से आते सुगंधित नवजीवन को
दिशा दिखलाने की बारी आयी है,

भास्कर तप करके थम गया है,
उसका अमृत ज्ञान हमें दे गया है,
उसके रचित श्लोकों का जप करना है,
नव भास्कर बन फिर से तप करना है।

यही जीवन है। यही मोक्ष है।

समीर